Daily Gospel Reflections in Hindi

24 July 2019

लूकस 16: 9-17

YOU CANNOT SERVE TWO MASTERS

''तुम ईश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते''। पुराने विधान के यहूदियों का मानना था कि अगर कोई ईश्वर के सामने अच्छा आचरण करता हो, ईश्वर उसे धन–संपत्ती से अनुग्रहित करते है। धन–संपत्ति को किसी के अच्छे आचरण का और प्रभु की आशिष का प्रतीक माना जाता था। और विपत्ति, बुरे आचरण और ईश्वर के क्रोध का प्रतीक समझा जाता था। लेकिन इस बात को अय्यूब के ग्रंथ निरर्थक साबित कर दिया है।

प्रभु के समय यहूदी जनता नाकेदारों और फरीसियों से घृणा करने का एक कारण यह था कि वे बहुत धनी थे, और, धन कमाने के मोह में डूबे हुए थे। प्रभु धन– संपत्ति के महत्व को समझते थे। उन्होंने कभी अपने लिए धन एकत्र नहीं किया। थैली हमेशा यूदस इसकरियोती के पास रहा करता था (Jn.12:6)। इसके साथ–साथ धन–संपत्ति से उत्पन्न होने वाले खतरे से भी प्रभु वाकिफ थे। ''मूर्ख, इसी रात तेरे प्राण तुझसे ले लिए जायेंगे और तूने जो इकट्ठा किया है, वह अब किसका होगा'' (Lk. 12:20)। इसका संदेश यह हैं कि ईश्वर और पड़ोसी को भुलाकर केवल अपने लिए धन कमाने से कोई ईश्वर की दृष्टि में धनी नहीं बनता। प्रभु यह चेतावनी भी देते है– ''सुई के नाके से होकर ऊँट का निकलना अधिक सहज है, किन्तु धनी का ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना कठिन है'' (Mt. 19:24)।

सवाल पहली आज्ञा के पालन का है। अक्सर हम इस गलतफहमी में रहते है कि पहली आज्ञा मात्र अन्य देवताओं को न मानने की है। वास्तव में पहली आज्ञा उस से कही बढ़कर है। हमारे जीवन में प्रथम स्थान ईश्वर का है। उतनी अहमियत हम किसी व्यक्ति, वस्तु या जगह को नहीं दे सकते। हम सोचते है कि जितना धन हम कमाते है, उतना धन हमारे अधीन या कब्जे में है। हकीकत में, जितना धन हम कमाते है, हम उतने धन में दब जाते है, हम उस धन के अधीन हो जाते है, और वह धन हमारे जीवन के सबसे प्रथम स्थान में स्वयं आसीनस्त हो जाता है, और धनी को इसका भनक भी नहीं लग जाती है। जब तक उसे अहसास हो जाता है, तब तक काफी देर हो चुकी होती है (Lk. 12:15-21)।

यह दुविधा हमारे ख्रीस्तीय जीवन में भी आ जाती है। अक्सर हम देखते है कि किसी भी चर्च के Organizers या Leaders धनी लोगों को ही चुना जाता है। धनी होना कोई पाप नहीं है। लेकिन संत पौलूस कहते है, ''धनियों से अनुरोध करो कि वे घमण्ड न करे और नश्वर धन–सम्पत्ति पर नहीं, बल्कि ईश्वर पर भरोसा रखें... वे भलाई करते रहें, सत्कर्मों के धनी बने, दानशील और उदार हो'' (1 Tim 6:17,18)। उत्पत्ति ग्रन्थ में हम पाते है कि ईश्वर ने हमें संसार के मालिक की तरह नहीं, बल्कि कारिन्दे के रूप में बनाया है (Gen. 2:15)। तो हम ईमानदार कारिन्दे की तरह समय–समय पर रसद बांटा करें, भाई–बहनों की देखरेख करते रहें (Mt. 24:45-51)।

Rev. Fr. Rojan Chirayath

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019